ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह
(शोध पत्रिका)

SANSKRITIK PRAVAH
Research Journal

वर्ष 4 अंक 1 संयुक्तांक : अगस्त, 2016-फरवरी, 2017

Bi- annual Bi-lingual

विशेषांक

भारत में धार्मिक जनसांख्यिकी असंतुलन
(Religious Demographic Imbalance in India)

A Multi Disciplinary Referred Research Journal
Dedicated to Socio-Cultural Harmony.

Religion wise Growth rate of Population in India 2001-2011 (in per cent)

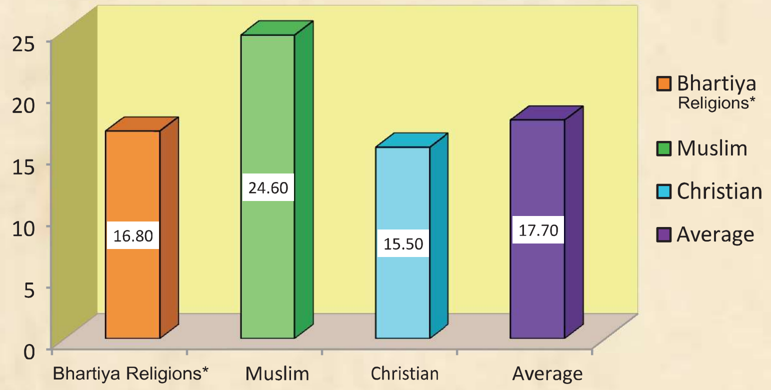

* Bhartiya Religions include - Hindu, Sikh, Jain, Buddhist etc.

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर
All India Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan

Subscription Rate

Institution & Library	-	Rs. 2200 (5 years)	Rs. 5100 (15 years)
Research Scholars/ Students Teachers / Others	-	Rs. 900 (5 years)	Rs. 2500 (15 years)
Single Copy	-	Rs. 125/-	

Subscription may be sent by cheques/drafts drawn in favour of
Editor, Sanskritik Pravah, Jaipur

The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and the **'Sanskritik Pravah'** accepts no responsibility for them.

Correspondence and Contact

सांस्कृतिक प्रवाह

803, वेदांग हाईट्स, नन्दपुरी, प्रताप सर्किल के पास,
प्रतापनगर, जयपुर-302033
e-mail : editor.sprj@gmail.com
website : www.sisnet.co.in
Contact : 0141-2973369 (Off.), 094143-12288 (Chief Editor)
09414350711 (Editor)

Published by : Prof. Ashutosh Pant, Secretary
All India Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)
803 Vedang Heights, Nandpuri, Pratapnagar, Jaipur-302033

Printed at : Kumar & Company, Jaipur

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

(शोध पत्रिका)

वर्ष 4 अंक 1 संयुक्तांक : अगस्त, 2016 –फरवरी, 2017

अर्द्धवार्षिक द्वि–भाषी

विशेषांक

भारत में धार्मिक जनसांख्यिकी असंतुलन

(Religious Demographic Imbalance in India)

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के लिए
समर्पित एक बहु–विषयात्मक शोध पत्रिका

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान

803, वेदांग हाईट्स, नन्दपुरी, प्रताप सर्किल के पास, प्रतापनगर, जयपुर-302033

Sanskritik Pravah

Patron

Sh. Ramprasad	:	Mentor & Guardian, Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur

Editorial Advisory Board

Prof. M. L. Chhipa	:	Vice Chancellor A.B. Vajpeyi Hindi University, Bhopal (M.P.)
Dr. Kuldeep Chand Agnihotri	:	Vice Chancellor Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala (H.P.)
Prof. J. P. Sharma	:	Vice Chancellor MLS University, Udaipur (Raj.)
Prof. Bhagirath Singh	:	Vice Chancellor Bikaner University, Bikaner (Raj.)
Prof. P. K. Dashora	:	Vice Chancellor Kota University, Kota (Raj.)
Prof. K.G. Sharma	:	Professor & Head, Deptt. of History & Indian Culture University of Rajasthan, Jaipur
Padamshri Mujaffar Husain	:	Journalist & Vice Chairman, National Council for Promotion of Urdu Language, HRD Ministry, New Delhi

Chief Editor

Sh. Ram Swaroop Agrawal	:	Ex Principal, Govt. Law College, Kota & Sriganganagar (Raj.)

Editor

Dr. Vinod Kumar Sharma	:	Associate Professor, Jyotish Vibhag J.R. Rajasthan Sanskrit University, Jaipur

Managing Editor

Dr. Jagdish Narayan Vijay	:	Assistant Registrar J.R. Rajasthan Sanskrit University, Jaipur

Associate Editor

Dr. Gopal Sharan Gupta	:	Centre for Rajasthan Studies, University of Rajasthan, Jaipur

Editorial Board

Prof. Ashutosh Pant	:	Adl. Director, Swasthya Kalyan Group of Institution, Jaipur
Dr. Sheela Rai	:	Associate Professor, Deptt. of Pol. Science, University of Rajasthan, Jaipur
Dr. Premlata Swarnkar	:	Assistant Professor in Geography, Govt. Meera Girls College, Udaipur

अनुक्रमणिका / CONTENTS

पृष्ठ संख्या

– **सम्पादकीय ...** 9

– **Religious Demographic Imbalance : At a Glance** 11

1. **भारतः धार्मिक जनसांख्यिकी परिवर्तन** 16
– अविनाश शर्मा

2. **भारत के जनसांख्यिकी स्वरूप में परिवर्तनः विशेष सन्दर्भ – राजस्थान** 27
– डॉ. प्रेमलता स्वर्णकार

3. **मतान्तरित (धर्मान्तरित) न किये जाने का अधिकार : संदर्भ संविधान सभा में हुई बहस** 37
– रामस्वरूप अग्रवाल

4. **सेवा की आड़ में धर्मान्तरण** 47
– राजेन्द्र चड्ढा

5. **अपने ही देश में शरणार्थी कश्मीरी पंडितों के आन्तरिक विस्थापन के सन्दर्भ में प्रशासकीय अध्ययन** 51
– डॉ. अनिल कुमार पारीक

6. **अनुच्छेद 370 का जम्मू-कश्मीर पर जनांकिकीय प्रभाव** 58
– बालूदान बारहठ

7. **रिपोर्ट मर्दूम शुमारी : धर्मान्तरित जातियों का प्रामाणिक दस्तावेज** 64
– डॉ. सूरज राव

8. **मुंबई में बढ़ती मुस्लिम जनसंख्या : एक अध्ययन** 72
– भूषण दामले

9. **बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठ की कीमत चुकाता पश्चिम बंगाल** 83
– राजेन्द्र चड्ढा

10. **Shrinking ‘Hindu’stan** 88
– Prof J. P. Sharma

11. **Demographic Discourse in Colonial India** 98
– Rakesh Sinha

12. **Is Minority Status to Muslims Justified?** 118
– Prof. Alpana Kateja

13. **Faith in the Closet: Crypto-Christians in India** 127
– Dr. Shreerang Godbole

14. **Report of Lt. General S.K. Sinha Governor of Assam on Illegal Migration of Muslim Population From East Pakistan and Bangladesh in Assam : An Analysis** 133
– Prof. Ram Karan Sharma

15. **The Christianisation of the Northeast** 149
– Dr. J. K. Bajaj

16. **Seismic Demographic Change: An Assimilated and Alienated Manipuri Society** 167
– Prof. R.K. Narendra Singh

17. **A Study of Minority Rise in the State of Kerala** 177
– Dr. Priyanka Mathur

18. **Mail to the Editor** 181
The World Scenario : Great Expansion of Islam
– Dr. J. K. Bajaj

19. **पुस्तक समीक्षा / आलेख : दर्दपुर (क्षमा कौल)** 182
अपने ही देश में विस्थापित कश्मीरी हिन्दुओं के दर्द की कहानी
– डॉ. अलका अग्रवाल

20. **गतिविधियाँ** 188

Contributors

1. **Prof. Alpana Kateja**
   Professor of Economics & Principal,
   University Maharani College, University of Rajasthan, Jaipur (Raj.)

2. **Dr. AlkaAgrawal**
   Principal, Government College,
   Uniara, Tonk (Raj.)

3. **Dr. Anil Kumar Pareek**
   Assistant Professor, Public Administation,
   Government Arts College, Kota (Raj.)

4. **Avinash Sharma**
   Assistant Director, Census,
   Directorate of Census Rajasthan, Jaipur (Raj.)

5. **Baludan Barhat**
   Assistant Professor, Political Science,
   Govt. Meera Girls College, Udaipur (Raj.)

6. **Bhushan Damle**
   Social Worker and State Convenor,
   Pragya Pravah, Konkan (Maharastra)

7. **Dr. J. K. Bajaj**
   Director, Centre for Policy Studies (CPS),
   New Delhi

8. **Prof J. P. Sharma**
   Vice Chancellor,
   MLS University, Udaipur.

9. **Dr. Premlata Swarnkar**
   Assistant Professor, Geography,
   Govt. Meera Girls College, Udaipur (Raj.)

10. **Dr. Priyanka Mathur**
Professor, FMS-IRM,
Mansarovar, Jaipur (Raj.)

11. **Rakesh Sinha**
Associate Professor, Delhi University,
Honorary Director, India Policy Foundation (IPF) New Delhi.

12. **Rajendra Kumar Chaddha**
All India Co-convenor,
Pragya Pravah, New Delhi

13. **Prof. R.K. Narendra Singh**
Demographer & Head, Department of Biostatistics,
RIMS, Imphal (Manipur)

14. **Dr. Ram Karan Sharma**
Professor & Principal,
School of Law, NIMS University, Jaipur (Raj.)

15. **Ram Swaroop Agrawal**
Ex- Principal,
Govt. Law College, Kota and Sriganganagar (Raj.)

16. **Dr. Shreerang Godbole**
Endocrinologist, Specialist in Diabetes and Hormonal Disorder,
Social Worker and Writer, Pune (Maharastra)

17. **Dr. Suraj Rao**
Assistant Registrar,
M.D.S. University, Ajmer (Raj.)

सम्पादकीय

सबके हित में है धार्मिक जनसांख्यिकीय असंतुलन को रोकना

जब चर्चा धार्मिक जनसांख्यिकी में असंतुलन के प्रभावों पर हो रही हो तो सच्चर समिति द्वारा इस संबंध में की गई टिप्पणी का स्मरण करना उचित ही होगा। समिति ने धार्मिक संख्या बल को असंगत मानते हुए लिखा, ''चूंकि मुस्लिम आबादी की वृद्धि औसत से ज्यादा है और कुछ समय तक ऐसी ही रहने की सम्भावना है, तब एक प्रश्न बहुधा पूछा जाता है कि ऐसा ही रहा तो मुस्लिम समुदाय (भारत में) सबसे बड़ा समूह कब बन जायेगा।'' सच्चर समिति ने इस प्रश्न पर प्रतिप्रश्न किया, ''इससे क्या फर्क पड़ता है कि कौन से समूह की आबादी सबसे ज्यादा है?'' प्रश्न है कि क्या वाकई कोई फर्क नहीं पड़ता? सच्चर समिति द्वारा किये गये प्रतिप्रश्न का उत्तर ढूँढ़ना होगा।

जहाँ यह वास्तविकता है कि भारत के रहवासी मुसलमानों और ईसाइयों का यह उनका अपना देश है, उतना ही जितना कि हिन्दुओं का, उन्हें भी संविधान में सभी अधिकार हैं और इस देश में धर्म के आधार पर भेदभाव वर्जित है, वहीं यह भी वास्तविकता है कि एक विशेष धार्मिक समूह की आबादी में बढ़ोत्तरी के कारण ही देश को विभाजन का दंश झेलना पड़ा।

जिस धरती पर आज पाकिस्तान है, वह भारत-भूमि ही है। भारत की पहचान दुनियाँ में जिन तत्त्वों के कारण होती है, वे तत्त्व क्या उस भारत भूमि में रह गये हैं? तो बताइये, देश की धार्मिक जनसांख्यिकी में बदलाव से क्या वाकई कोई फर्क नहीं पड़ता?

यह स्थिति इस देश के मुसलमानों व ईसाइयों को भी समझनी होगी। उन्हें भी स्वीकार करना होगा कि हाँ, यही सत्य है और यह सभी के हित में है कि अब और धार्मिक जनसांख्यिकीय असंतुलन न पैदा हो।

कांग्रेस की अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गाँधी ने कोलकाता के बैलूर मठ में दिए अपने उद्‌बोधन में कहा था कि इस देश में पंथनिरपेक्षता (धर्मनिरपेक्षता) तभी है जब यहाँ हिन्दू बहुसंख्या में हैं। श्रीमती गाँधी के मुख से तब वास्तविकता ही उजागर हुयी थी। देश में प्रजातंत्र है और मुसलमान, ईसाइयों सहित सभी को प्रजातंत्र के लाभ प्राप्त हैं। परन्तु क्या किसी मुस्लिम देश में सही मायने में प्रजातंत्र है? वहाँ अन्य धर्मावलम्बियों की स्थिति क्या है? वहाँ स्वयं मुसलमानों का कितना विकास हुआ है? तो यह देश मुस्लिम बहुल न बने, यह भारतीय मुसलमानों के भी हित में है।

देश-विभाजन के समय सभी मुसलमानों को मुस्लिम बहुल देश बनने जा रहे पाकिस्तान में रहने का मौका मिला ही था, परन्तु मुसलमानों की एक बड़ी आबादी ने यह विकल्प ठुकरा कर इस देश

भारत में ही रहना स्वीकार किया, क्योंकि वे जानते थे कि इस हिन्दू बहुल देश में वे ज्यादा सुरक्षित रहेंगे। 'मुस्लिम हित' का तात्पर्य 'मुस्लिम मजहब के हित' इस घेरे से निकलना आज आवश्यक है। मुस्लिम हित यानि 'मुस्लिम समाज का हित'। मुस्लिम हित यानि मुसलमान बच्चों, स्त्रियों व पुरुषों, सबका हित, सबका विकास।

और फिर, क्यों हम प्रयत्न करें कि दूसरे मजहब वाले हमारा मजहब अपना लें। सर्वोच्च न्यायालय ने भी तो यही कहा है। यदि सभी ऐसा कर लें तो देश में साम्प्रदायिक झगड़ों का एक बड़ा कारण ही समाप्त हो जायेगा। क्या हमारा अस्तित्व, हमारी पहचान हमारे मजहब से ही है? मजहब से इतर भी हमारी एक पहचान है कि हम भारत के रहने वाले हैं। भारत की विशिष्ट संस्कृति है, सभ्यता है, विरासत है। एक ही पूर्वजों की संतानें हैं हम। इस देश का एक तत्त्व ज्ञान है, जीवन पद्धति है, जीवन मूल्य हैं। यह सब भी तो हमारे साझे हैं। हम मजहब बदल लें तो क्या इन सबको हमें छोड़ना होगा? मजहब की पहचान से किसे ऐतराज है? परन्तु हमारी 'भारतीय पहचान' भी तो बनी रहे।

यह विचार विमर्श तथा साफगोई बुद्धिजीवी वर्ग के अनेक लोगों के अनुकूल नहीं होगी। परन्तु स्थापित सत्य को तो स्वीकार करना ही होगा।

इस देश की धार्मिक जनसांख्यिकी में और बदलाव न हो इसका प्रयत्न भारत मूल के सभी धर्मावलम्बियों को भी करना होगा। वे बहुलता से बने रहेंगे तो भारत जिंदा रहेगा, भारत की पहचान जिंदा रहेगी।

यह सभी का दायित्व है कि विभिन्न धार्मिक समुदायों की प्रजनन-दर में समानता रहे, मतांतरण (धर्मान्तरण) एवं अवैध घुसपैठ पर कड़ाई से रोक लगे। यही एक रास्ता है भारत की पहचान बनाये रखने का। इस हेतु सामाजिक संगठनों एवं सरकार को विशेष प्रयत्न करने होंगे तथा जनसाधारण को भी सजग रहना होगा।

प्रस्तुत अंक

इस अंक में धार्मिक जनसांख्यिकी विषय के अधिकारिक विद्वानों एवं शोधकर्ताओं के शोधपत्र/आलेख शामिल हैं। विषय के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते ये आलेख पाठकों के मन में उठते प्रश्नों का समाधान करने में समर्थ होने के साथ ही भविष्य में यह अंक संदर्भ सामग्री के रूप में उल्लेखित होगा, ऐसा विश्वास है।

– रामस्वरूप अग्रवाल

Religious Demographic Imbalance : At a Glance

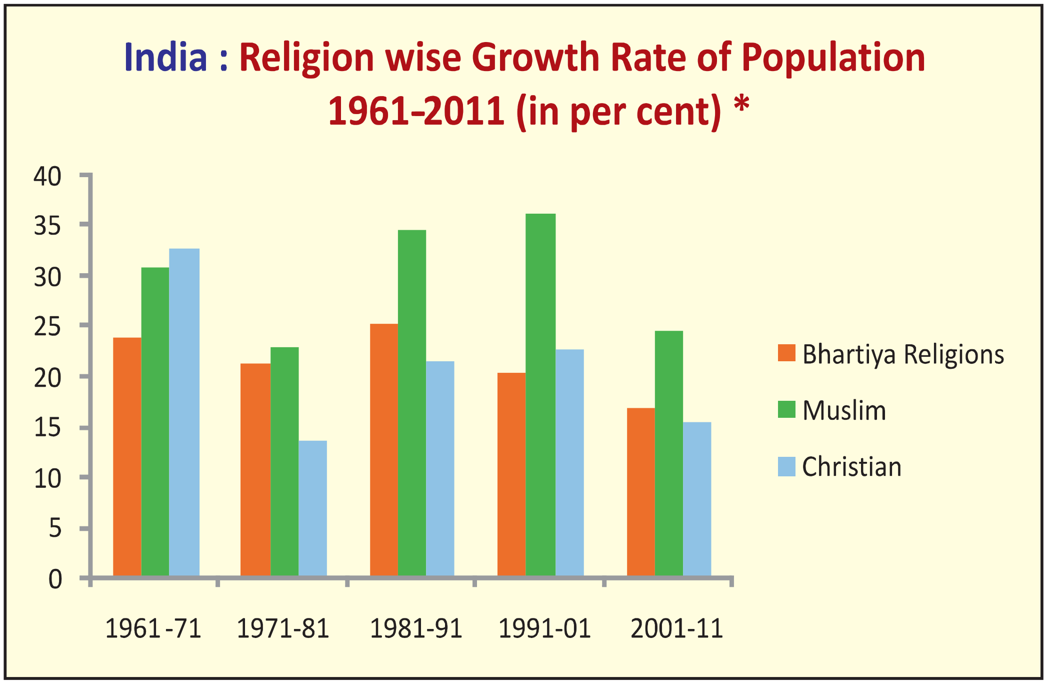

Bhartiya Religions include- Hindu, Sikh, Jain, Buddhist etc.

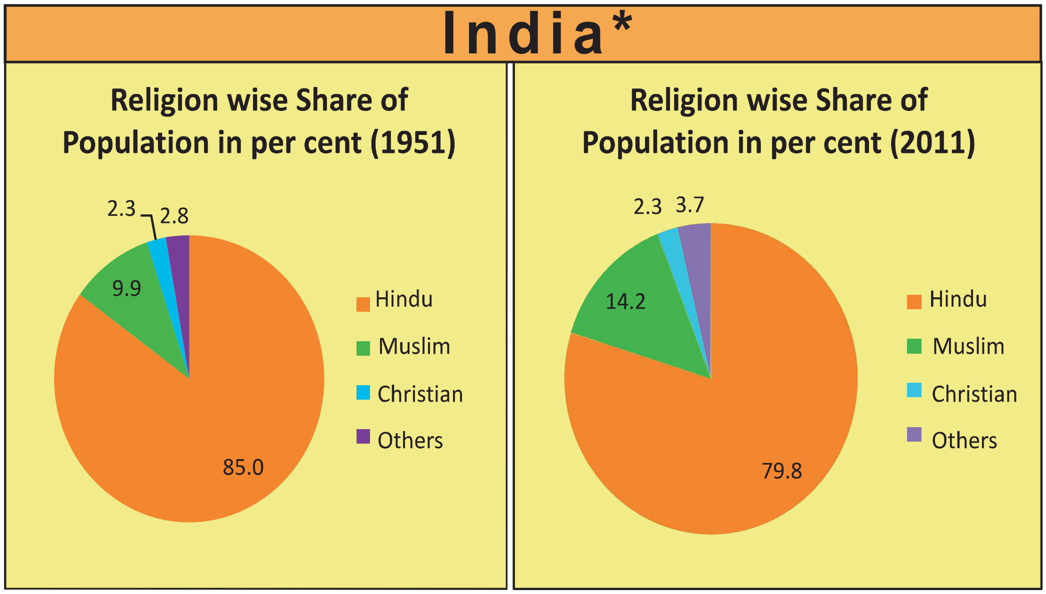

* Source : Census Reports of India

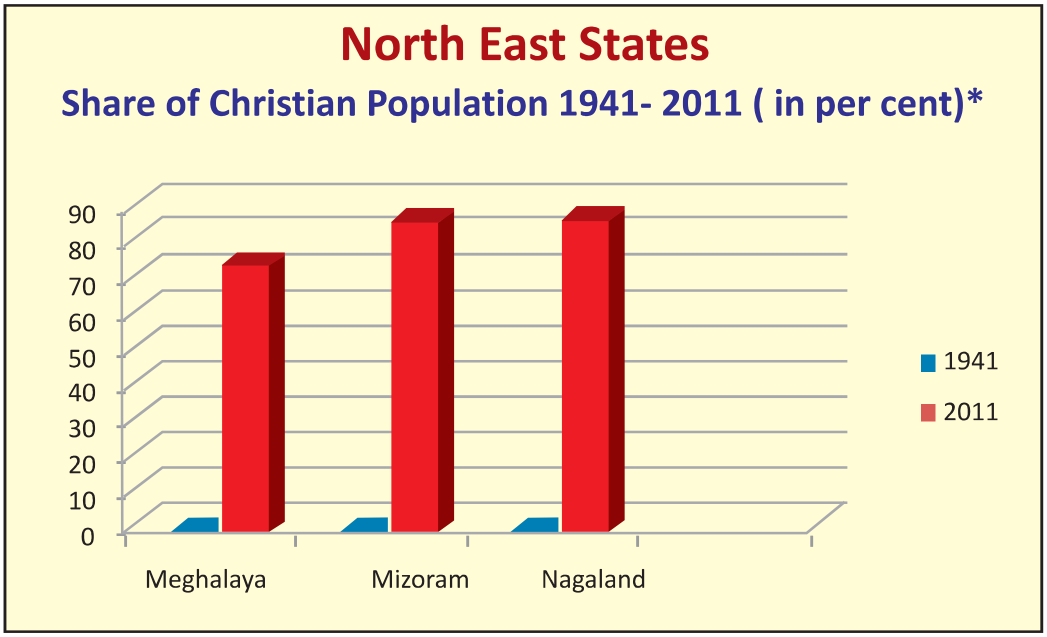

(The share of Cristian Population in 1941 was less than one percent in these states)

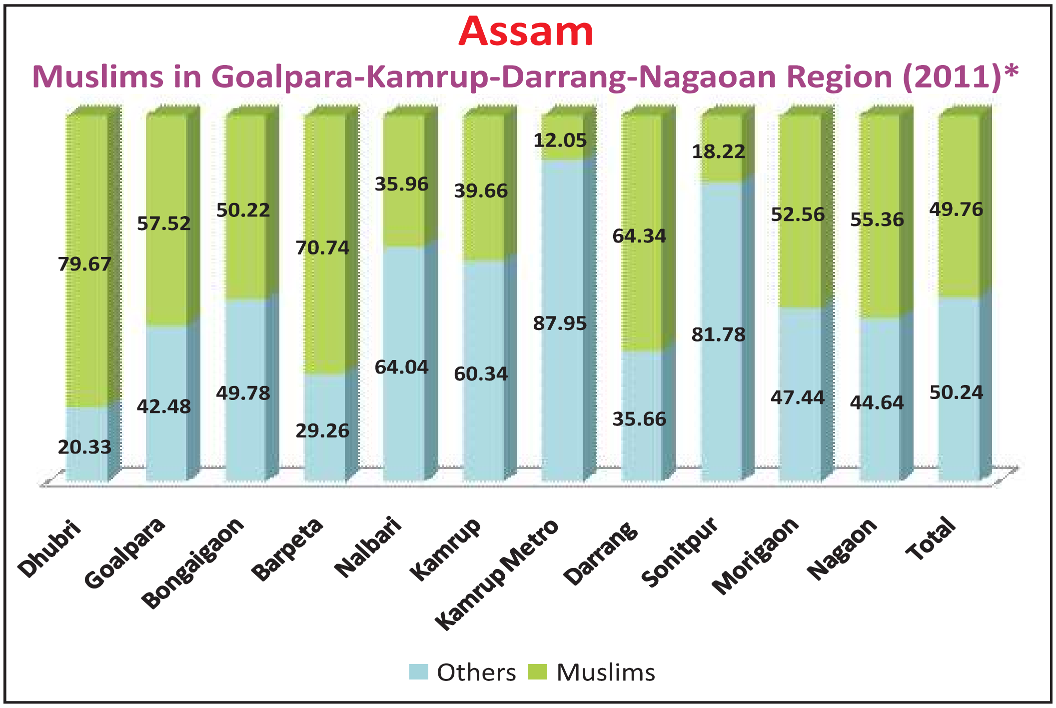

* Source : Religion Data of Census 2011 : XXVIII, http://blog.cpsindia.org

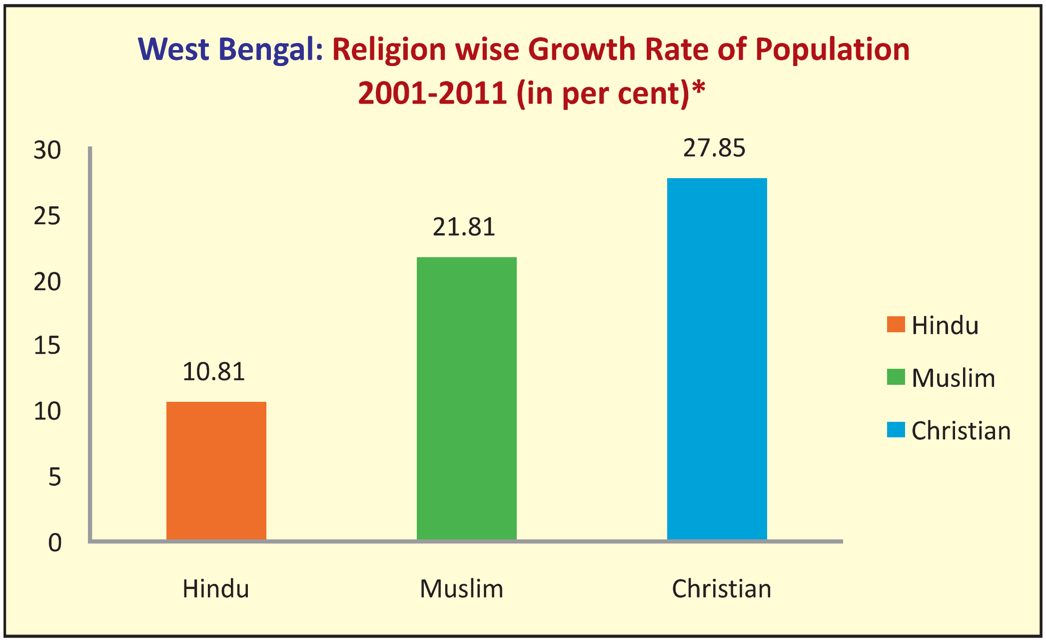

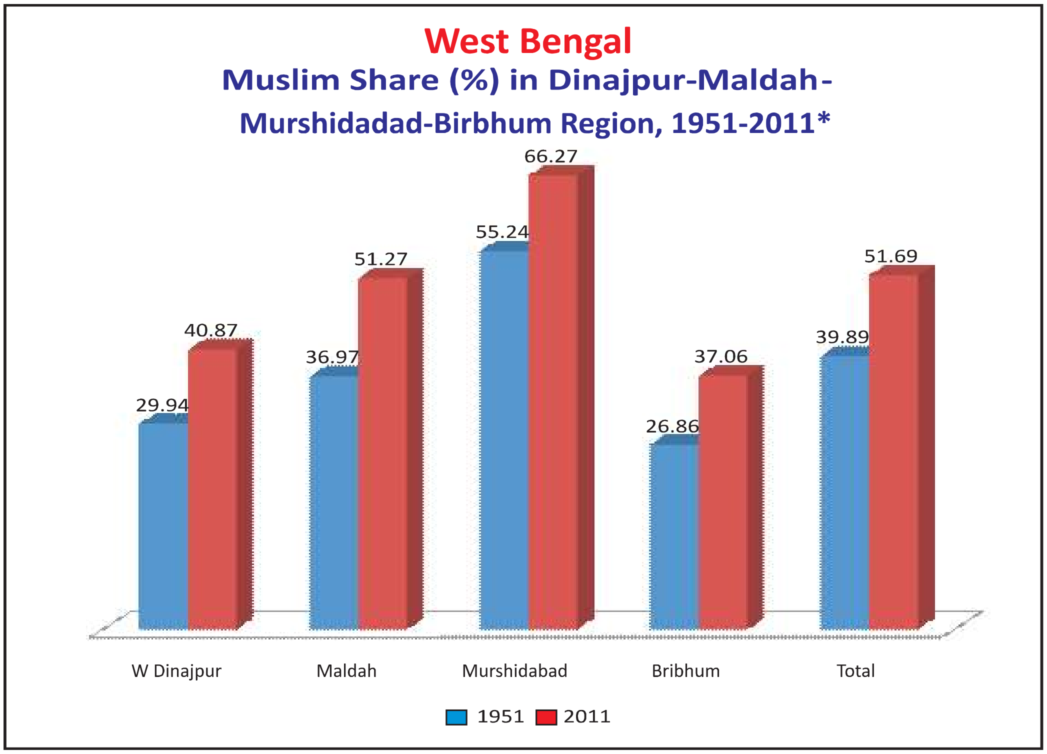

* Source : Religion Data of Census 2011 : XIX, http://blog.cpsindia.org

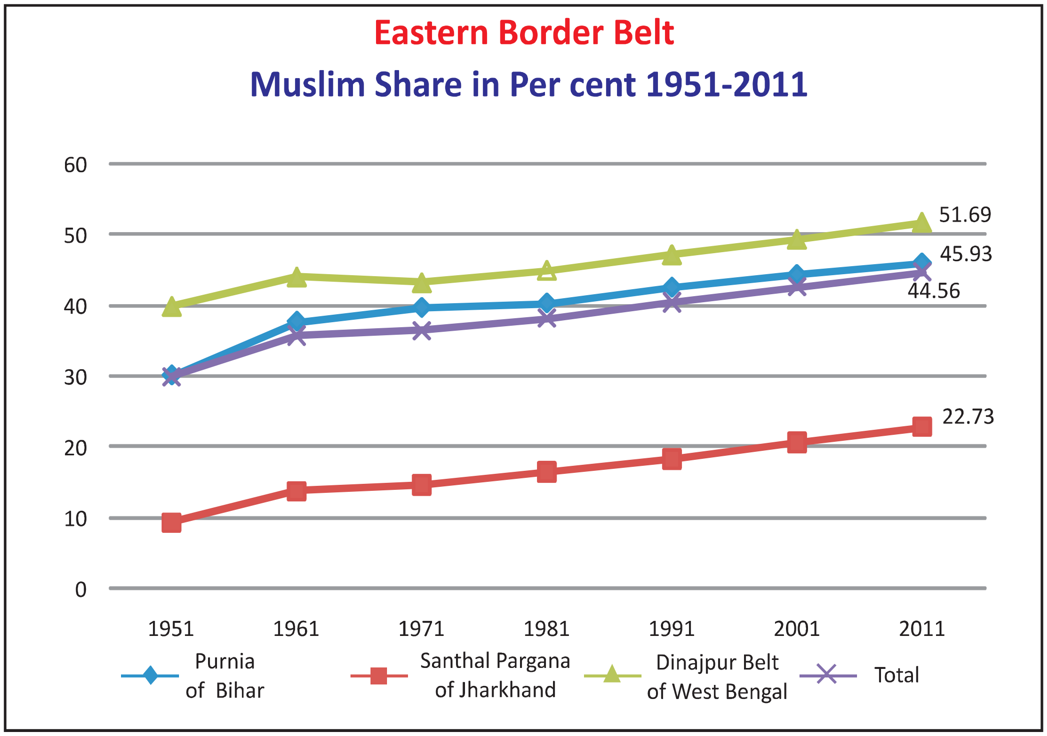

Source : Religion Data of Census 2011 : XIX, http://blog.cpsindia.org

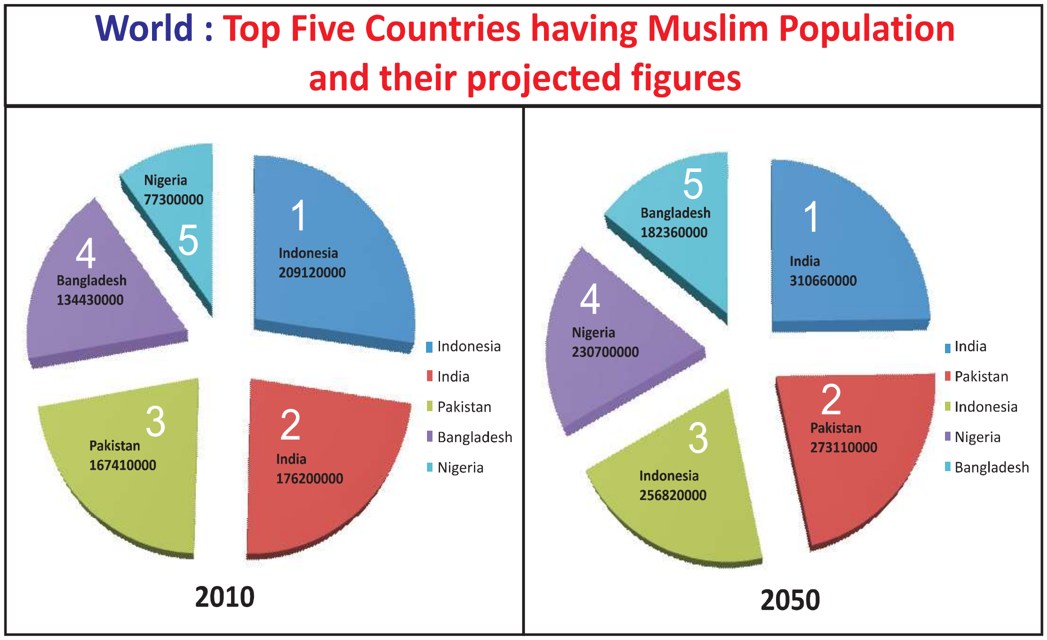

Source : The Future of World Religions : Population Growth Projection, www.pewforum.org

Density of Muslim and Christian Population in India